Drishtikon
(UGC Care Journal)

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

मूक बधिर बालकों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन

डॉ विष्णु कुमार[1], डॉ राकेश कुमार यादव[2]

[1]सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं।

[2]सहायक प्रोफेसर, सेठ श्री सूरजमल तापडिया आचार्य संस्कृत महाविघालय, जसवन्तगढ, नागौर।

सांराश

शिक्षा व्यक्ति के जीवन को सुखमय बनाने का महत्वपूर्ण साधन है। यह व्यक्ति के जीवन को उच्च मूल्यों को स्थापित करती है। नागरिक देश के उत्थान में कार्य करने वाली एक इकाई है। प्रत्येक नागरिक का उत्थान शिक्षा का कार्य है। भले ही वह नागरिक विकलांग या मूक-बधिर ही क्यों न हो। मूक-बधिर नागरिक भी देश की उन्नति में अपूर्व योगदान दे सकता है एवं आज का बच्चा ही कल का नागरिक बनेगा। अतः हमारा दायित्व बन जाता है कि ऐसे प्रयास किये जाये जिससे मूक-बधिर विद्यार्थियों को शैक्षणिक समस्याओं का सामना न करना पड़े। मूक-बधिर विद्यार्थियों के प्रति कैसा व्यवहार, कैसे उन्हें उत्थान हेतु प्रेरित किया जाये आदि हमारे पाठ्यक्रम के अंग होने चाहिए। शोध के माध्यम अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। जिसकी उपयोगिता विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं अध्यापकों के लिए कारगर सिद्ध होता है।

प्रस्तावना

मूक-बधिरता मानव जीवन की सबसे बड़ी कमी हैं। सबसे बड़ा दुर्भाग्य है बधिर बालक की समस्याऐं अनेक है उनका जीवन बड़ा ही कठिन है उनकी शिक्षा की मंजिल बहुत ही दुरूह है। माँ की मधुर पुचकार का आनन्द वह नहीं ले सकता अपने भाई-बहिनों के प्यार भरे शब्द नहीं सुन सकता वाद्य यन्त्रों की मधुर धुन तान व पक्षियों की कलख उसके लिए निस्सार है सारा जगत ही उसके लिए शून्य है किन्तु फिर भी उसके जीवन को उपयोगी बनाया जा सकता है विशिष्ट शिक्षा एवं प्रशिक्षण के माध्यम से। सैकड़ो वर्षों तक जन्मजात श्रवण बाधित व्यक्ति को 'डम्ब' समझा जाता रहा। केवल इस अर्थ में नहीं कि वह बोल नहीं सकता बल्कि मूर्ख समझा जाता था वस्तुतः उन्हें कानूनी रूप से असक्षम समझा जाता था उन्हें

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

सम्पत्ति की पैतृकत्ता, विवाह करने, शिक्षा प्राप्त करने और चूनौतियोंपूर्ण कार्य करने, उन्हें और मौलिक अधिकारों से वंचित रखा जाता था किन्तु 18 वीं शताब्दी के मध्य में यह सामान्यतः समझा गया कि बहरें व्यक्तियों में भी बौद्धिक क्षमता का अन्तर सामान्य श्रेणी में होता हैं (जैसा कि सुन सकने वाले लोगों में होता हैं) और उन्हें भी भाषा सीखने और बोलने में शिक्षित किया जा सकता हैं यदि उन्हें उस रूप में शिक्षित किया जाये जिस रूप में वे सीख सकते हैं इसके परिणामस्वरूप अब ये प्रयास किये जा रहे हैं कि सामान्य जनता को शिक्षित किया जाये और सामाजिक दृष्टिकोण को बदला जाये तथा अब ये प्रयास किय जा रहे हैं कि शब्द बहरा और गूंगा या बहरा-मूक शब्द बहरा या श्रवण क्षितग्रस्त श्रवण से पुर्नस्थाति किया जा सकता हैं किन्तु यह कहना बेकार होगा कि केवल शब्दों के प्रयोग में परिवर्तन से श्रवण बाधिर बोलने वाले व्यक्ति नहीं हो जायेंगे तो आसानी से शिक्षित व्यक्ति नहीं हो जायेगें। केवल निरन्तर, व्यवस्थित और इसके लिये बौद्धिक प्रयासों से ही श्रवण क्षतिग्रस्तता वाले बच्चों से लम्बें समय तक प्रशिक्षण एवं प्रेरणा से वांछित परिवर्तन लाया जा सकता हैं।

बधिरता की अदृश्य प्रकृति और छोटे बधिर बच्चों में इसकी विद्यमानता का पता लगाने में कठिनाई ने इस विचार को जन्म दिया कि बधिर व्यक्ति शिक्षा के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः बधिरों के इतियास को पृष्ठ मूक हैं जैसा कि दीर्घकाल तक बधिरों मूक बने रहे। यह हमने 16 वीं सदी में यूरोप, यू एस ए और भारत में बधिर व्यक्तियों की शिक्षा के क्षेत्र में होने वाली प्रगति को प्रस्तुत करके के प्रयास किये हैं। राजस्थान में मूक बधिर बच्चों के लिए जयपुर, बांसवाड़ा, अजमेर, जोधपुर, उदयपुर एवं बीकानेर में ही उच्च माध्यमिक विद्यालय है जबकि अन्य 27 जिलों में कोई इंतजाम नहीं है। ऐसे में इन जिलों के बच्चों को शिक्षा के अधिकार से वंचित करना पड़ता है। या अन्य जिलों में जाकर महंगा शिक्षण प्राप्त करना पड़ता है। प्रदेशभर में निःशक्तजनों के संचालित 12 केन्द्रों में लगे शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति समाप्त कर सरकार ने विशेष शिक्षकों को सामान्य स्कूलों में लगा दिया है। लिहाजा, केन्द्रों में विशेष योग्यजन विद्यार्थियों को पढ़ाने वाला कोई नहीं रहा है। विशेष योग्यजन विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए प्रदेशभर में केवल 57 विशेष शिक्षक ही है। सरकार ने इन सभी शिक्षकों को सामान्य स्कूलों मे नियुक्त कर दिया। शारीरिक निशक्तता से जूझ रहे बच्चों के लिए शिक्षा आज भी सपना है सरकारी योजनाओं में मूक-बधिर बच्चों के लिए शिक्षा के तमाम दावे खोखले साबित हो रहे हैं। आश्चर्यजनक है कि करीब 7 लाख मूक-बधिर

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

और डढ़े लाख दृष्टिबाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए राज्य में विशेष प्रशिक्षण प्राप्त एक भी शिक्षक नहीं है। यह खुलासा हुआ है सूचना का अधिकार कानून के तहत मिली जानकारी में।

समस्या का औचित्य

विश्व में जितने बच्चे जन्म लेते हैं उनमें से प्रत्येक दस में से एक बच्चा शारीरिक रूप से विकलांग होता है। इस तथ्य से विकलांगता की समस्या की भयावहता प्रमाणित होती है। इन विकलांग बच्चों का इस प्रकार से पालन-पोषण व शिक्षित करना आवश्यक है ताकि वे समाज के क्रियाशील सदस्य बन सके तथा अपने कुशल जीवनयापन के साथ समाज एवं राष्ट्र की प्रगति में अपनी भूमिका का निर्वाह कर सके। आज प्रत्येक विकलांग (मुक-बधिर, नेत्रहीन अपंग) का शिक्षित होना आवश्यक है। शिक्षा के बल पर ही विकलांग बच्चा व्यक्ति समाज में उचित व सम्मानजनक स्थान प्राप्त करता है और अपनी उन शक्तियों को विकसित कर सकता है जो उसको भावी जीवन की सफलता के लिए आवश्यक है। यदि दुर्भाग्य से बालक मुक-बधिक है तो शिक्षा उसके लिए परम आवश्यक है क्योंकि बधिरता एक ऐसी विकलांगता है जो अदृश्य होते हुए भी सबसे अधिक प्रभावित करती है और सहज ही किसी का ध्यान अपनी और आर्कषित नहीं करती बधिर बालक आने वालों समाज में बधिरता की कमी को शिक्षा के आधार पर ही दुर कर सकते हैं। शिक्षा के अभाव में बधिर निर्बल और प्रभावहीन हो जायेगा। संसार में सबल बनकर जीने हेतु बधिर शिक्षा बहुत आवश्यक है। विशिष्ट बालकों की शिक्षा के लिए हमारे देश मे सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन कार्य कर रहे हैं इन संगठनों द्वारा विशिष्ट बालकों की शिक्षा हेतु विशिष्ट सुविधा युक्त विधालयों का निर्माण किया जा रहा है ताकि इन बालकों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो सके परन्तु इन सब प्रयासों के बाद भी क्या इन विधालयों में मूक-बधिर बालकों के लिए प्रर्याप्त शैक्षिक सुविधाएं उपलब्ध हैं क्या यह विधालय अपने इस प्रयास में सफल हो रहे हैं? क्या मूक बधिर विद्यार्थियों की इन सुविधाओं का लाभ मिल रहा हैं ? क्या इन सुविधाओं से उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हो रहा है?

यदि यह विद्यालय अपने उद्देश्यों में सफल हो रहे हैं तो हमारे लाखों मूक-बधिर विद्यार्थी समाज की मुख्य धारा में जुड़ जायेंगे जिससे देश आज के निर्माण में वह अपना योगदान दें पायेंगे। मूक-बधिर बालकों कि शैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु सरकार एवं निजी स्वयं सेवी संस्थाएं क्या प्रयास कर रही हैं? क्या मूक बधिर बालकों की समस्याओं हेतु किये जा

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

रहे प्रयास प्रर्याप्त है? आदि प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने हेतु ही इस समस्या का चयन किया गया। अतः प्रस्तुत समस्या अपने आप में औचित्य पूर्ण है तथा इस समस्या पर अध्ययन करना अति आवश्यक है। चुंकि इससे प्राप्त निष्कर्ष हमें विशिष्ट बालकों की शिक्षा पर किये जा रहे प्रयास कितने सफल या असफल रहे आदि के बारे में जानकारी उपलब्ध होगी जो विशिष्ट बालकों की शिक्षा के लिए भावी योजना बनाने में सहायक है।

समस्या कथन- मूक बधिर बालकों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन

शोध के उद्देश्य

(1) सरकारी एवं गैर-सरकारी विधालयों में अध्ययनरत मुक-बधिर विद्यार्थियों की अध्यापक, पाठ्यक्रम, सहायक सामग्री, शैक्षिक सहगतिविधिया, गृहकार्य, ट्युशन, मनोविज्ञान एव परिवार, आर्थिक एव सामाजिक समस्या शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाए

1. परिकल्पना- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बघिर विद्यार्थियो की शिक्षण में आने वाली बाधाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।
2. परिकल्पना- सरकारी एवं गैर-सरकारी विधालयों में अध्ययनरत मूक-बधिर विद्यार्थियों की अध्यापक, पाठ्यक्रम, सहायक सामग्री, शैक्षिक सहगतिविधिया, गृहकार्य, ट्युशन, मनोविज्ञान एव परिवार, आर्थिक एव सामाजिक समस्या शैक्षिक समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

शोध विधि-सर्वेक्षण

अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श

कुल न्यादर्श
180 (जयपुर, अजमेर एवं बीकानेर जिले)

सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	निजी विद्यालय के विद्यार्थी
90 (मूक-बधिर)	90 (मूक-बधिर)

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

शोध के चर (Variables)

- स्वतन्त्र चर-मूक-बधिर प्रशिक्षणार्थी
- आश्रित चर-पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक समस्याएँ

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

(1) मूक-मूक व्यक्ति का तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है जिसकी बोलने की क्षमता बाधित हो अर्थात् जो व्यक्ति बोलने में असमर्थ होता है मूक कहलता है।

(2) बधिर-बधिर व्यक्ति से आशय ऐसे व्यक्ति से है जिसकी सुनने की क्षमता बाधित हो गई है अर्थात् जो श्रवण करने में असमर्थ हो।

(3) मूक-बधिर-ऐसे व्यक्ति जिनमें एक से अधिविकलांगता के लक्षण पाये जाते है। बहुल विकलांग श्रेणी में आते है। मूक-बधिर भी बहुल विकलांगता की श्रेणी में रखे जाते हैं। इस प्रकार मूक बधिर से आशय है कि जो न सुन सके और न ही बोल सके।

शोध अध्ययन में उपकरण-स्वनिर्मित प्रश्नावली

शोध अध्ययन में सांख्यिकीय विधियां-प्रस्तावित शोध कार्य में निम्न सामान्य सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया जायेगा-

1. प्रतिशत
2. मध्यमान (M)
3. मानक विचलन (SD)
4. टी-परीक्षण ('t' मूल्य)

समस्या का परिसीमन

1. शोध कार्य जयपुर, बांसवाड़ा एवं बीकानेर जिले तक सीमित है।
2. शोध कार्य में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों को सम्मिलित किया जायेगा।
3. शोध कार्य में केवल मूक-बधिर छात्र-छात्राओं को ही शामिल किया जायेगा।
4. शोध कार्य में कक्षा 7 व 8 तक के विद्यार्थियों को लिया जायेगा।

शोध निष्कर्ष

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

परिकल्पना 1- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बघिर विद्यार्थियो की शिक्षण में आने वाली बाधाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

सारणी-1

शिक्षण के कुल आठ घटकों का समूह	**समूह**	**संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**मानक त्रुटि**	**मध्यमान का अंतर**	**टी परीक्षण का मान**	**शून्य परिकल्पना का परिणाम**
शिक्षण में आने वाली बाधायें	सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	57.10	8.925	.941	9.889	9.577	अस्वीकृत
	गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	66.99	4.038	.426			

*If degree of freedom is 178, the table value for t-test to be significant at .05 level of confidence is 1.98 (N_1+N_2-2) =178

उपरोक्त सारणी 1 के अध्ययन से यह स्पष्ट होता हैं कि सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बघिर विद्यार्थियो की शिक्षण में आने वाली बाधाओं के समूह का मध्यमान 57.10, मानक विचलन 8.925 तथा मानक त्रुटि .941 और गैर सरकारी विद्यार्थियो का मध्यमान 66.99, मानक विचलन 4.038 तथा मानक त्रुटि .426 पाया गया हैं। दोनों समूह के मध्यमान का अंतर (9.889) पाया गया हैं। इन प्राप्तांकों से टी का मान 9.577 रहा, जो कत्रि 178 के 0.05 स्तर के 1.98 मूल्य से अधिक हैं। अतः सार्थक अन्तर पाया गया हैं। निष्कर्ष रूप में हम कह सकतें है कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बघिर विद्यार्थियो की शिक्षण में आने वाली बाधाओं में कोई सार्थक अन्तर पाया जाता हैं। अतः शून्य परिकल्पना 4.1 को अस्वीकृत किया जाता है।

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

परिकल्पना संख्या-2 में उप-परिकल्पना 1 से 8 का परीक्षण

उप-परिकल्पना संख्या 1 से 8-सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बघिर विद्यार्थियों के शिक्षण में आने वाली बाधाओं के घटकों में अध्यापक सम्बन्धी समस्याए, पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्या, सहायक सामग्री समस्या, सहशैक्षिक गतिविधि की समस्या, गृह कार्य सम्बन्धी समस्या, ट्युशन सम्बन्धी समस्या, आर्थिक सामाजिक समस्या, मनोविज्ञान और परिवार सम्बन्धी समस्या में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सारणी संख्या-2.सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थियो के शिक्षण में आने वाली बाधाओं के घटको का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षण के घटक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	मध्यमान का अंतर	टी परीक्षण का मान	शून्य परिकल्पना का परिणाम
अध्यापक सम्बन्धी समस्याएँ	सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	4.93	1.760	.185	.011	.058	स्वीकृत
	गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	4.4	.459	.048			
पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएँ	सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	3.90	1.102	.116	.978	7.567	अस्वीकृत
	गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	4.88	.537	.057			

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

सहायक सामग्री समस्याएँ	सरकारी विद्यालयों के मूक-बधिर विद्यार्थी	90	6.12	1.965	.207	2.333	9.532 अस्वीकृत
	गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बधिर विद्यार्थी	90	8.46	1.238	.130		
सहशैक्षिक गतिविधि की समस्याएँ	सरकारी विद्यालयों के मूक-बधिर विद्यार्थी	90	8.03	2.190	.231	1.067	4.038 अस्वीकृत
	गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बधिर विद्यार्थी	90	9.10	1.218	.128		
गृह कार्य सम्बन्धी समस्याएँ	सरकारी विद्यालयों के मूक-बधिर विद्यार्थी	90	6.57	1.350	.142	1.611	7.783 अस्वीकृत
	गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बधिर विद्यार्थी	90	8.18	1.427	.150		
ट्यूशन सम्बन्धी समस्याएँ	सरकारी विद्यालयों के मूक-बधिर विद्यार्थी	90	11.98	3.775	.398	1.900	4.493 अस्वीकृत

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

	गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	10.10	1.358	.143		
आर्थिक एव सामाजिक समस्या	सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	5.77	2.023	.213	3.078	13.950 अस्वीकृत
	गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	8.84	.539	.057		
मनोविज्ञान एव परिवार सम्बन्धी समस्या	सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	9.78	2.779	.293	2.711	8.179 अस्वीकृत
	गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बघिर विद्यार्थी	90	12.49	1.471	.155		

*If degree of freedom is 178, the table value for t-test to be significant at .05 level of confidence is 1.98 df $(N_1+N_2-2)=178$

उपरोक्त सारणी 2 के अध्ययन से सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बघिर विद्यार्थियो के शिक्षण में आने वाली बाधाओं के घटक क्रमश अध्यापक सम्बन्धी समस्याएँ, पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएँ, सहायक सामग्री समस्याएँ, सहशैक्षिक गतिविधि की समस्याएँ, गृह कार्य सम्बन्धी समस्या, ट्यूशन सम्बन्धी समस्याएँ, आर्थिक सामाजिक समस्या, मनोविज्ञान एव परिवार सम्बन्धी समस्या से टी परीक्षण का मान 0.58, 7.567, 9.532, 4.038, 7.783, 4.493, 13.950 और 8.179 रहा। जो टी तालिका मूल्य के .05

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

स्तर के 1.98 से देखा गया है। उप परिकल्पना 1 से 8 मे सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के मूक-बधिर विद्यार्थियो के शिक्षण में आने वाली बाधाओं के घटकों में अध्यापक सम्बन्धी उप परिकल्पना में कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है। जबकि पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएँ, सहायक सामग्री समस्याएँ, सहशैक्षिक गतिविधि की समस्याएँ, गृह कार्य सम्बन्धी समस्या, ट्यूशन सम्बन्धी समस्याएँ, आर्थिक सामाजिक समस्या, मनोविज्ञान एव परिवार सम्बन्धी समस्या की उप परिकल्पनाओं में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः शिक्षण में आने वाली बाधाओं के घटक क्रमश अध्यापक सम्बन्धी समस्याएँ, की शून्य उप-परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं। जबकि पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएँ, सहायक सामग्री समस्याएँ, सहशैक्षिक गतिविधि की समस्याएँ, गृह कार्य सम्बन्धी समस्या, ट्यूशन सम्बन्धी समस्याएँ, आर्थिक सामाजिक समस्या, ओर मनोविज्ञान एव परिवार सम्बन्धी समस्या की शून्य उप-परिकल्पनायें अस्वीकृत की जाती हैं।

परिकल्पनाओं के आधार पर निष्कर्ष

परिकल्पना 1- सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बधिर विद्यार्थियो की शिक्षण में आने वाली बाधाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता हैं।

सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बधिर विद्यार्थियों की शिक्षण में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करने पर पाया गया कि इन दोनों मूक बधिर विद्यालयों के विद्यार्थियों में पाठ्यक्रम, अध्यापक, सहायक सामग्री, गृह कार्य, सह-शैक्षिक गतिविधियां, ट्यूशन, आर्थिक एवं सामाजिक, मनोविज्ञान एवं परिवार सम्बन्धी समस्याएं देखने को मिली। इन दोनों विद्यालयों की शैक्षिक समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया। निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि सरकारी एवं गेर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बधिर विद्यार्थियों की शिक्षण में आने वाली बाधाओं में सार्थक अन्तर पाया जाता है। अतः शून्य परिकल्पना 1 को अस्वीकृत किया गया है।

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

परिकल्पना संख्या-2 में उप-परिकल्पना 1 से 8 का परीक्षण

उप-परिकल्पना संख्या 1 से 8-सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक-बधिर विद्यार्थियों के शिक्षण में आने वाली बाधाओं के घटकों में अध्यापक सम्बन्धी समस्याए, पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्या, सहायक सामग्री समस्या, सहशैक्षिक गतिविधि की समस्या, गृह कार्य सम्बन्धी समस्या, ट्युशन सम्बन्धी समस्या, आर्थिक सामाजिक समस्या, मनोविज्ञान और परिवार सम्बन्धी समस्या में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत मूक बधिर विद्यार्थियों की शिक्षण में आने वाली बाधाओं का अध्ययन करने पर देखा गया कि सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्यापन सम्बन्धी समस्याओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जबकि पाठ्यक्रम, सहायक सम्बन्धी, सह-शैक्षिक, गृह कार्य, ट्यूशन सम्बन्धी, आर्थिक, सामाजिक समस्या, मनोविज्ञान एवं परिवार सम्बन्धी समस्याओं में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः शिक्षण में आने वाली बाधाओं के घटक क्रमशः अध्यापक सम्बन्धी समस्याएं की शून्य उप-परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। जबकि पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्याएं, सहायक सामग्री समस्याएं, सह-शैक्षिक गतिविधि की समस्याएं, आर्थिक सामाजिक समस्या और मनोविज्ञान एवं परिवार सम्बन्धी समस्या की शून्य उप परिकल्पनाएं अस्वीकृत की जाती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्निहोत्री, रवीन्द्र (2008); आधुनिक भारतीय शिक्षा: समस्याएं और समाधान, जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
2. भार्गव, महेश (1999); आधुनिक मनोविज्ञानिक परीक्षण एवं मापन, आगरा: हरि प्रसाद भार्गव बुक कम्पनी।
3. बिहारी विश्वनाथ एवं त्रिपाठी नरेषचन्द्र (2008); शिक्षा में नवाचार, आगरा-2: विनोद पुस्तक मन्दिर।
4. जीत योगेन्द्र भाई (2008); शिक्षा में नवाचार और नवीन प्रवृतियां, आगरा-2: विनोद पुस्तक मन्दिर।
5. गुप्ता एस.पी., (2006); भारतीय षिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याये, इलाहाबाद: शारदा पुस्तक मंथन।

Copyright©authors

ISSN 0975-119X
Vol-12-Issue-02
February-2020

6. कपिल, एच. के. (1995); अनुसंधान की विधियाँ, आगरा: हरिप्रसाद भार्गव।
7. लवनियां, एम. एम. (1989); भारत में सामाजिक समस्याएं, जयपुर: कालेज बुक डिपो।
8. पाण्डेय,रामशकल एवं मिश्र करूणा शंकर (1998); भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर।
9. पाठक, पी. डी. (1974); भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ, आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर।
10. राय, पारसनाथ (1993); अनुसंधान परिचय, आगरा: चावला एण्ड संस।
11. रूहेला, सत्यपाल (1986); सर्वेक्षण अनुसंधान और सांख्यिकी, विकास पब्लिकेशन हाउस।
12. सिंह, अरूण कुमार (2004); शिक्षा एवं सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान, पटना।
13. शर्मा, आर. ए. (2009); शिक्षा अनुसंधान, मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
14. शाह, एम. ए. (2009); मनोविज्ञान परीक्षण, आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर।
15. श्रीवास्तव, डी. एन. (2009); सांख्यिकी व मापन, आगरा: विनोद पुस्तक मन्दिर।
16. सिंह, अरूण कुमार, (2004); मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षण में शोध विधियां, दिल्ली: मोतीलाल, बनारसी पब्लिशर्स।
17. सिंह, रामपाल, शर्मा, ओ.पी. (2007); शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, आगरा-7: अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
18. श्रीवास्तव, रामजी एवं अन्य, (2008); आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान, दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स।
19. नई शिक्षा, प्रकाशक, 12 उगम पथ, बनीपार्क, जयपुर।
20. शैक्षिक मंथन, शैक्षिक महासंघ सदन 606/13, कृष्णा गली नं. 9, मौजपुर, दिल्ली-110053.
21. http://www. righttoeducation.in.
22. http://www/righttoeducationinrajasthan.
23. http:www.educationforallinindia.com/righttoeducation.
24. http://www.education.nic.

Copyright©authors